DOON UNIVERSITY

NEWSPAPER CLIPPING SERVICES

प्रतिष्ठित संगीत नाटक अकादमी ने वर्ष 2022-23 के लिए नई दिल्ली में पुरस्कारों की घोषणा की

भट्ट समेत सात को संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार

देहरादून, वरिष्ठ संवाददाता। संगीत नाटक अकादमी ने वर्ष 2022-23 के लिए पुरस्कारों की घोषणा कर दी है। लोकनाट्य के लिए राकेश भट्ट, रंगमंच के लिए जहूर आलम, लोकगायन एवं संगीत के क्षेत्र में डॉ. संजय पांडेय एवं डॉ. लता तिवारी समेत कुल सात नामों का ऐलान किया गया।

नई दिल्ली में सामान्य परिषद की बैठक के बाद संगीत नाटक अकादमी के सचिव राजू दास की ओर से यह सूची जारी की गई। थियेटर क्षेत्र में लम्बा अनुभव रखने वाले नैनीताल के वरिष्ठ रंगकर्मी जहूर आलम, लोकनाट्य के लिए वरिष्ठ लोकगायक डॉ. राकेश भट्ट के नामों की घोषणा से उत्तराखंड के कलाकारों में खासा उत्साह है। उनको संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार दिया जाएगा। इसके अलावा श्रीनगर के कला एवं निष्पादन केंद्र से जुड़े बागेश्वर के डॉ. संजय पांडेय एवं अल्मोड़ा की डॉ. लता तिवारी पांडेय, शास्त्रीय तालवादन में संतूर वादक पार्थो राय चौधरी, चमोली के डिम्मर गांव की संस्कृत-गढ़वाली रामलीला में योगदान के लिए पुनीत डिमरी एवं अमित खंडूड़ी को उस्ताद बिस्मिल्लाह खां युवा पुरस्कार दिया जाएगा। इसके तहत एक लाख की राशि, ताम्रपत्र और अंगवस्त्र भेंट किया जाता है। जबकि, उस्ताद बिस्मिल्लाह खां युवा पुरस्कार के तहत 25 हजार की धनराशि, ताम्रपत्र और अंगवस्त्र भेंट किए जाते हैं।

- संजय एवं उनकी पत्नी को लोक संगीत में संयुक्त अकादमी सम्मान
- रामलीला में पुनीत डिमरी एवं अमित खंडूड़ी दोनों को संयुक्त अवॉर्ड

श्रीनगर है डॉ. राकेश भट्ट की कर्मस्थली

श्रीनगर। रुद्रप्रयाग के मंगोली ऊखीमठ निवासी डॉ. राकेश भट्ट को लोक रंगमंच, लोकगायन और लोकसंगीत संयोजन क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल है। गढ़वाली लोकनाट्य, लोकगाथाएं और जागर क्षेत्र में उनके नाम तीस साल में कई उपलब्धियां दर्ज हैं। वे गढ़वाल विवि के श्रीनगर परिसर में सेवाएं दे चुके हैं और वर्तमान में दून विवि के रंगमंच एवं कला प्राध्यापक हैं। वे शैलनट, विद्याधर श्रीकला, घाद लोकनाट्य और उत्सव ग्रुप से भी जुड़े रहे हैं। उत्तराखंड के पौराणिक पांडव नृत्य, चक्रव्यूह, शकट व्यूह, कमल व्यूह, नंदा देवी राजजात, नंदा की कथा, जीतू बगड़वाल, पंथ्या दादा, दुर्पदा की लाज जैसे कई नाटकों के निर्देशन एवं अभिनय के साथ उन्होंने संगीत भी दिया है।

संस्कृति का संरक्षण कर रहा पांडेय दंपति

डॉ. संजय पांडेय और डॉ. लता तिवारी पांडेय लोक संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए पिछले 15 वर्षों से काम कर रहे हैं। पांडेय दंपति की ओर से उत्तराखंड की पौराणिक संस्कृति, लोकगीत चैती, बैड़ा, मांगल और संस्कार गीत के संरक्षण में उल्लेखनीय काम किए जा रहे हैं। दोनों दंपति दूरदर्शन आकाशवाणी के ए-ग्रेड कलाकार भी हैं। डॉ. संजय वर्तमान में केंद्रीय गढ़वाल विवि श्रीनगर के लोक कला संस्कृति विभाग में कार्यरत हैं, जबकि डॉ. लता राजकीय बालिका इंटर कॉलेज श्रीनगर में संगीत अध्यापिका हैं।

06 मार्च को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में प्रदान किए जाएंगे पुरस्कार

पहाड़ की रामलीला से जुड़े हैं डिमरी-खंडूड़ी

पारंपरिक रामलीला क्षेत्र में पुनीत डिमरी और अमित खंडूड़ी को संयुक्त रूप से उस्ताद बिस्मिल्लाह खां युवा पुरस्कार दिया जाएगा। कर्णप्रयाग के डिम्मर गांव में वर्ष 1918 से चली आ रही रामलीला से दोनों कलाकार जुड़े हैं। यह गांव आदि शंकराचार्य के साथ आए लोगों की ओर से बसाया हुआ माना जाता है। अमित आयुष विभाग में फार्मासिस्ट और पुनीत डिमरी जीएमवीएन में कार्यरत हैं।

जहूर आलमः पांच दशक से रंगमंच को समर्पित

नैनीताल में जन्मे और पिछले पांच दशक से नैनीताल में ही रंगमंच को समर्पित जहूर आलम सांस्कृतिक क्षेत्र में चिर-परिचित चेहरा हैं। उत्तराखंड साहित्य संस्कृति एवं कला परिषद के उपाध्यक्ष जहूर राज्य गीत चयन समिति के भी सदस्य रहे। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के भारत रंग महोत्सव समेत कई अंतरराष्ट्रीय नाट्य महोत्सवों में स्क्रीनिंग कमेटी के सदस्य रहे। उनको प्रो. बीवी कारंथ, प्रो. बीएम शाह, प्रो. मोहन उप्रेती, अनुपम खेर, डॉ. उर्मिल थपलियाल, प्रो. डीआर अंकुर, प्रो. सुरेश शर्मा जैसे दिग्गज निर्देशकों के साथ काम का अनुभव है। नाटक जारी है, एक था गधा, अंधेर नगरी, गिरगिट, फट जा पंचधार, कोर्ट मार्शल, हानूश, मातादीन दीनानाथ, राजुला मालूशाही, गापुली बुबु और नगाड़े खामोश हैं जैसे नाटकों में उन्होंने निर्देशन एवं अभिनय भी किया।

डॉ. संजय पांडेय और डॉ. लता तिवारी पांडेय।

डॉ. राकेश भट्ट।

जहूर आलम

अमित खंडूरी

पुनीत डिमरी

पार्थो राय चौधरी

दून स्कूल में एचओडी हैं पार्थो राय चौधरी

करीब चौदह साल से देहरादून में रह रहे पार्थो राय चौधरी शहर के प्रतिष्ठित दून स्कूल के संगीत विभाग में बतौर एचओडी कार्यरत हैं। उन्होंने कुमाऊं विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि हासिल की। इसके अलावा उन्होंने नैनीताल के मशहूर शेरवुड स्कूल में भी कुछ समय तक पढ़ाया।

दून विवि में डॉ. राकेश भट्ट का हुआ सम्मान

देहरादून। दून विवि में बुधवार को लोक कला व थियेटर के प्रोफेसर डॉ. राकेश भट्ट का सम्मान किया गया। विवि की कुलपति प्रो. सुरेखा डंगवाल ने कहा कि डॉ. राकेश पिछले कई दशकों से उत्तराखंड की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, लोक गीत-संगीत व लोक कला को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं। कुलपति ने कहा कि डॉ. भट्ट का जीवन रंगमंच एवं लोक कला के लिए एक तपस्वी की भांति समर्पित है।

News paper – Hindustan
Date – 29.02.2024